ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-10* January- 2019
Anthology : The Research

साहित्य एवं पत्रकारिता

बी. नंदा जागृत
सहायक प्राध्यापक,
——————————–विभाग,
शासकीय दिग्विजय
महाविद्यालय,
श्राजनांदगांव, छ. ग.

सारांश

आधुनिक हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में पत्र–पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। ''हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में मुख्य रूप से भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, गांधी युग तथा गांधी युग के पश्चात् स्वातंत्र्योत्तर युग की प्रमुख भूमिका रही है। हिन्दी पत्रकारिता का शुभारंभ प्रथम हिन्दी सप्ताहिक पत्र 'उदन्त मार्त्तंड' द्वारा 30 मई 1826 ई. से कानपुर निवासी पं. युगल किशोर शुक्ल के कर–कमलों से हुआ जिसे उन्होंने बंगाल से प्रकाशित किया था।''[1]

मुख्य शब्द :

प्रस्तावना

साहित्य और पत्रकारिता एक दूसरे के पूरक हैं परन्तु पत्रकारिता और साहित्य के संबंध में विवाद रहा है। चोटी के पत्रकारों एवं उतकृष्ट साहित्यकारों ने कहा है कि ''सर्वोत्तम पत्रकारिता साहित्य है और सर्वोत्तम साहित्य पत्रकारिता है।''[2] इन्हीं विचारों का समर्थन करते हुए बर्नाड शॉ कहते हैं ''कुशल पत्रकार, साहित्यकार से भिन्न नहीं है। अगर साहित्य का काम विश्व को ठीक से देखना और परखना है तो पत्रकारिता का भी पहला कार्य यही है।''[3]

साहित्य और पत्रकारिता दोनों का उद्देश्य है समाज में नवजागृति, नवस्फूर्ति, नवीन ज्ञान, नवीन संवेदना का प्रचार करना। पत्रकारिता के उद्देश्य के संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं ''पत्रकारिता का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं और विचारों को समझना तथा उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना तथा तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों का निर्भीकतापूर्वक प्रकट करना है।''[4] सामाजिक परिवर्तन में पत्रकारिता की महती भूमिका होती है। प्रसिद्ध छायावादी कवियीत्री महादेवी वर्मा का पत्रकारिता की उपयोगिता के संबंध में मानना है कि ''पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असंभव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वहन निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्ही के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।''[5]

देश की चेतना को झंकृत करने में मीडिया की अहं भूमिका होती है। मीडिया की विशेष कड़ी के रूप में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका निःसंदेह महत्वपूर्ण हो जाती है। पत्र–पत्रिकाएं साहित्य की विधाओं की जन्मदात्री रही है। ''राष्ट्र की आंकाक्षाओं विचारों और प्रेरणाओं की वाहिका के रूप में पत्रों ने हिन्दी को राष्ट्र–वाणी का रूप प्रदान किया। हिन्दी संबंधी समस्त आंदोलन पत्रकारों द्वारा ही सशक्त हुए।''[6] पत्रकारिता अभिव्यक्ति का शसक्त माध्यम है। शासक, प्रशासक पत्रकारिता के सशक्तिकरण को भली भांति समझते है इसलिए अकबर इलाहाबादी ने कहा जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालिए–

''खींचो न कमाओ को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।''[7]

हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग के प्रणेता भारतेंदु हरिचन्द्र से प्रारंभ साहित्यिक पत्रकारिता ने देश की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक सरोकारों के प्रति जनता को नई दिशा दी एवं एक नया दृष्टिकोण भी प्रदान किया। जिसका परिणाम हमें देश की

स्वतंत्रता के रूप में प्राप्त हुआ। प्रसिद्ध कांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त ने स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों एवं पत्रकारों की भूमिका का विश्लेषण करते हुए लिखा है ''प्रारंभिक युग में पत्रकार– लेखकों ने ही फूंक–फूँक कर शुरू की ओदी, बुरी तरह धुऑ देकर ऑसु लाने वाली लकड़ियॉ जलाकर संग्राम का अलाव जलाया।लकड़ियॅा इस बुरी तरह कच्ची और गीली थी कि आग जलाने वालों की आंखें फट–फट गई फिर भी यज्ञ की लकड़ियाँ जलने से चिड़चिड़ाकर इनकार करती रहीं। कवियों ने गीत गा–गाकर देशभक्ति की अग्नि को उत्तेजित करना चाहा पर लोगों के मन इस तरह मुर्दा बन चुके थे कि आग जलकर नहीं देगी, कभी मृत लहरों में लहू नहीं लहरायेगा पर धीरे–धीरे दृश्य बदल जगह–जगह चिनगारियॉ दिखाई देने लगी, जो थोड़े समय बाद मिलकर जलने लगीं और इस प्रकार एक दिन स्वाधीनता–सूर्य का उदय हुआ।''[8]

विभिन्न मासिक, पाक्षिक, सप्ताहिक एवं दैनिक समाचार पत्रों का हिन्दी साहित्य की अनेक शैलियों के विकास में योगदान रहा है। संपादकीय जैसे स्तंभ की भाषा 'पत्र' की भाषा शैली का अभास देता है। संपादकीय के विषयानुसार इसकी भाषा ओजपूर्ण, सुगठित वाक्य विन्यास तथा विषय एवं प्रसंग के अनुकूल भावों की तीव्रता इसकी शिल्प की विशेषता होती है। भारतेंदु ने लगभग 25 पत्र–पत्रिकाओं के प्रकासन में सहयोग दिया। उस समय की कुछ प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं के नाम– ''कविवचन सुधा, श्री हरिशचंद्र चंद्रिका, हिन्दी प्रदीप, उचित वक्ता, मित्र, सारसुधा, निधि, अनांद कादम्बनी, देवनागरी प्रचारक, ब्राह्मण, हिन्दोस्थान, हिन्दी बंगवासी, साहित्य सुधा निधि, नागरी प्रचारिणी पत्रिका आदि पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से भारतेंदु ने तात्वकालीन युग की स्थिति को प्रकट किया उन्होंने लिखा–

''अब जहं देखहू वहं दुख हि दुख दिखाई
हा हा ! भारत दुर्दशा देखी न जाई।''[9]

तत्कालीन पत्रकारिता में लेखक अपने उद्देश्य को बड़े ही सीधे तरीके से जनता के बीच पहुँचाता था। युगनाधारी भारतेंदु अपने मुकरियों के लिए बहुत प्रसिद्ध हुए। उनकी प्रश्नोत्तर शैली की मुकरियॉ शासन–प्रशासन की पोल खोलकर रख देती थी एक बानगी देखिए :–

''स्वर्ग क्या है ? विलायत।

महापाप का फल क्या है ? हिन्दुस्तान में जन्म लेना।

महापापी कौन है ? देशी भाषा के अखबारों का एडिटर।

धर्म क्या है ? चौका लगाकर खान, स्वार्थ साधन में न चूकना।

करम का फटहा कौन ? हिन्दी

नाजनीन कौन ? बीबी उरदू।

पढ़ लिखे गुप्तचर कौन? हमारी मोटी तोंद वाले निरे पंडितजी।''[10]

इस तरह की हास्य व्यंग्य शैली की मुकरियॉ उस समय अत्यंत लोकप्रिय हुई। इनमें प्रशासनिक दोषों के साथ ही सामाजिक रूढियों पर भी प्रहार किये जाते थे। हिन्दी पत्रकारिता के साथ ही हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के विकास में भारतेंदु युग का विशेष स्थान है।

भारतेंदु युग के पश्चात् पत्रकारिता के क्षेत्र में द्विवेदी युगीन पत्रकारिता का चरण प्रारंभ होता है। इस युग के प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। इस युग को तिलक युग भी कहा जाता है। सन् 1900 से 1920 ई. तक इस युग में 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। काव्यकला निधी, जैनमित्र, आर्य सेवक, सुदर्शन, छत्तीसगढ़ मित्र, समालोचक, अवध–समाचार, वसुंधरा अनाथ रक्षक, आर्यवनिता, कवीन्द्रवाटिका, धर्मपथ, वैश्योपपरक, ब्राम्हण सर्वस्य, हितवार्ता, स्वदेशबंधु, मित्रगोष्ठी, हिन्दी–केसरी, मारवाड़ी बंधु, आनंद, अतभुद मित्र, दयानंद पत्रिका, देवनागर नागरी प्रचारक, बजरंगी समाचार, चंद्रप्रकाश, भारतभूमि, नृसिंह, भारतवासी, चांद, उषा देहाती, दीपिका, कवि, साधु समाचार, आयुर्वेद, सुधानिधि, कुलश्रेष्ठ, नवजीवन, व्यापार समाचार, बालवार समाचार, महिला हितकारक, हितोपदेशक, ब्रह्मचारी, सत्समाचार, समाज स्कूल मास्टर, सत्याग्राही आदि दैनिक साप्ताहिक, मासिक, पत्र–पत्रिकाओं ने देशकाल की परिस्थितियों और परिवेश को प्रस्तुत किया तथा अनेक नये साहित्यिक विधाओं को जन्म दिया।

सन् 1920 से 1947 ई. युग पत्रकारिता के इतिहास में छायावाद युग के नाम से अभिहित है। यह काल भारतीय राजनीती, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिवेश की दृष्टि से विशेषकर राजनीतिक दृ ष्टि से भारत के लिए विशिष्ट था। इस युग में साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन हुआ। इस युग की ''अगर प्रकाशित लेखों, कविताओं कहानियों और काव्यों का संयोजन किया जाये तो साहित्य–संसार को एक अमूल्य निधि प्राप्त हो सकती है। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित समकालीन साहित्य में जितनी ऊर्जा और संवेदना है, उतनी भूतकाल की प्रकाशित पुस्तकों में नहीं। हिन्दी पत्रकारिता इस दृष्टि से सौभाग्यशाली है कि उसके द्वारा लेखकों को समय–समय पर पोषण एवं प्रोत्साहन मिलता रहा।''[11] सरस्वती, प्रभा, श्रीशारद, चांद माधुरी, मतवाली, सुधा

इत्यादि इस युग में प्रकाशित प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ थी। तद्युगीन पत्रिकाओं ने हिन्दी को बहुमूल्य साहित्यकार तो दिए ही, साथ ही साहित्य में गद्य की विभिन्न विधाओं को जन्म देकर इनका पोषण भी किया।

इस काल में विशेष रूप से 'निबंध' विधा का नियमित रूप से प्रकाशन होता रहा। नये–नये विषयों पर निबंध लिखे गये। ''इस समय के बहुत से पत्रों में वैज्ञानिक, ऐतिहासिक तथा राजनीतिक लेख, संस्मरणात्मक यात्रा वृतांत, जीवनी, विविध सामाजिकवाद, सामयिक समस्यायें और उनके निराकरण, स्मृति, दर्शन, नारी जीवन, भूगोल, मनोविज्ञान, विविध प्रकार के आविष्कार, ग्रह, नक्षत्र आदि ऐसा कोई विषय नहीं था जिस पर निबंध लेखन न हुआ हो।''[12] इस काल में समाज में प्रचलित अंध विश्वास, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दाप्रथा आदि रूढ़िवादिता पर संपादकीय लिखे जाते थे जिसका समाज में विशेष प्रभाव पड़ा।

स्वातंर्त्योत्तर युग में भारत में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक परिवर्तन का यहॉ के जनमानस पर विपरीत प्रभाव पड़ा। आजादी के पूर्व लोगों की जो अपेक्षाएँ थी, जिसे जनता आजादी के बाद पूरा होते देखना चाहती थी वह भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अवसरवादिता के कुचक्र में डूब गई। ऐसे में जनता का संत्रास, घुटन आदि को पत्र पत्रिकाओं ने प्रकट किया। साहित्यकारों ने प्रकट किया। इस युग में साहित्यिक अभिरूची का विकास हुआ वर्तमान में पत्रकारिता व्यावसायिक रुप ले चुका है, फिर भी इसके माध्यम से साहित्य का विकास निरन्तर हो रहा है। साहित्यिक, सांस्कृतिक अभिरुचि के साथ ही भाषा–षिल्प का परिमार्जन हो रहा है। पत्रकारिता में मनोरंजन के साथ ही वैज्ञानिक क्षेत्र के विकास को भी दर्शाया जा रहा है।

स्वतंत्रता पूर्व की पत्र–पत्रिकाएँ समाज में आजादी के भावों को उद्धीप्त करती रहीं उनका उद्देश्य ही जनता को जागृत कर स्वतंत्रता के भावों को जगाना था। तत्कालीन युग में पत्रकारिता बनाम क्रांति था। यह क्रांति का शसक्त माध्यम था उस युग में निकलने वाले तमाम पत्र–पत्रिकाओं के नाम भी उसी तरह ओज और उत्साह प्रकट करने वाले होते है। 'स्वराज्य' नामक पत्र के लिए 'संपादक' पद हेतु निकाले गये विज्ञापन को पढ़िये ''चाहिए 'स्वराज्य' के लिए एक संपादक। वेतन दो सूखी रोटियॉ, एक गिलास ठंडा पानी और हर संपादकीय के लिए दस साल की जेल।''[13] इस विज्ञापन में देशभक्ति, देशप्रेम एवं देश के लिए समर्पण तथा स्वतंत्रता के लिए अप्रतिम जोश दिखाई देता है।

कालक्रमानुसार पत्रकारिता के स्वरूप में परिवर्तन होता गया परन्तु साहित्य का संबंध पत्रकारिता से बना हुआ है। आज स्वच्छ पत्रकारिता का स्थान पीत पत्रकारिता ले रही है। यह पत्रकारिता के लिए शुभ संकेत नहीं है। यह एक तरह से इस युग की खतरनाक पत्रकारिता' है। जिसमें पैसे से लेकर समाचार छापना तथा पैसे लेकर समाचार न छापना दोनों स्थितियॉ होती है। सभी पत्र–पत्रिकाएँ एवं पत्रकार इसी श्रेणी में है ऐसा नहीं है। आज भी ओज, उत्साह एवं जोश से भरे निर्भीक पत्रकारिता दिखाई देती है। जो अच्छे पत्रकारिता के भविष्य के लिए आवश्यक है।

पत्रकारिता का स्वरूप व्यापक है। वह आधुनिक जीवन शैली में गहराई तक जुड़ा है ग्रामीण, शहरी प्रत्येक क्षेत्र में अब इसका प्रभाव स्पष्ट रूप में दिखाई दे रहा है। मीडिया अपने विविध रूपों में मानव जीवन को प्रभावित कर रहा है। वह सूचना एवं संचार का एक सशक्त माध्यम तो है ही ज्ञान और संवेदना का व्यापक प्रसार भी करता है। इस दृष्टि से मिडिया की अनिवार्यता को नकारा नहीं जा सकता है। मनुष्य में अपने आस–पास घटित होने वाले घटनाओं के प्रति जिज्ञासा का भाव सदैव रहा है। वर्तमान में उसकी इस जिज्ञासा की पूर्ति जनसंचार के विविध रूपों से पूरी होती है।

निष्कर्ष

पत्रकारिता दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। यदि एक दिन अखबार पढ़ने को न मिले तो खालीपन का एहसास होने लगता है। मानव एक सामाजिक प्राणी। पत्र–पत्रिकाएँ मनुष्य के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। हमारे सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक जीवन की सभी स्थितियों का समावेश उसमें में होता है श्रेष्ठ साहित्यकार, श्रेष्ठ संपादक समसामयिक परिस्थितियों के अनुरूप विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से लोकरूचि एवं लोक विश्वास को अवधान में रखकर लोकोपयोगी नवीन ज्ञान प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015, आमुख पृ. 07*
2. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015, आमुख पृ. 241*
3. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015, आमुख पृ. 241*
4. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015, आमुख पृ. 08*
5. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015, आमुख पृ. 08*

6. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015, आमुख पृ. 36*
7. *संपादक – डॉ. स्मिता मिश्र–भारतीय मिडिया : अंतरंग पहचान–प्रकाशन 2008, पृ. 42*
8. *'लोकराज' वार्षिकी–1977 'स्वतंत्रता के पहले पत्रकारिता का माहौल' – मन्मथगुप्त – पृ. 45*
9. *डॉ. स्मिता मिश्र – भारती मीडिया : अंतरंग पहचान 2008, पृ. 46*
10. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015 पृ. 81*
11. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015 पृ. 145*
12. *नवीन चंद्र पंत – पत्रकारिता का इतिहास, तेज प्रकाशन, 2015 पृ. 162*
13. *डॉ. स्मिता मिश्र – भारतीय मीडिया : अंतरंग पहचान पृ. 52*